

### III. बाह्य क्षेत्र

भारत के भुगतान संतुलन (बीओपी), में 2011-12 में भारी गिरावट आई थी, परंतु 2012-13 की पहली तिमाही में उसमें थोड़ा सुधार हुआ। वाणिज्यिक वस्तु का व्यापार संबंधी घाटा 2011-12 की पहली छमाही की तुलना में 2012-13 की पहली छमाही में उसी स्तर पर रहा क्योंकि कमजोर वैश्विक मांग के चलते निर्यात में आई कमी और घरेलू आर्थिक गतिविधि में मंदी के चलते आयात में आया संकुचन करीब-करीब बराबर था। इस स्थिति और मध्यावधि में सेवा व्यापार में अधिशेष के कम होने की प्रवृत्ति के चलते चालू खाते के घाटे का स्तर अपेक्षित स्तर से काफी अधिक होने की संभावना है। घटना विशेष से जुड़े जोखिम के चलते सीएडी के वित्तपोषण का दबाव फिर से पनप सकता है लेकिन सरकार द्वारा हाल में घोषित नीतिगत उपायों से निवेश प्रवाह को तात्कालिक बढ़ावा मिला है। इन प्रवाहों के चलते रूपए की स्थिति मजबूत हुई। यद्यपि बाह्य अतिसंवेदनशीलता संकेतकों में 2012-13 की पहली तिमाही में आम तौर पर गिरावट आई, लेकिन भारत की कुल अंतरराष्ट्रीय निवेश की स्थिति (एनआईआईपी) में मुख्यतः मूल्यांकन प्रभाव के चलते सुधार आया।

#### वैश्विक वृद्धि संबंधी अनिश्चितताएं निर्यात वृद्धि के लिए बाधक बनी हुई हैं

III.1 भारत की निर्यात वृद्धि की दर में बाह्य मांग में गिरावट के चलते 2011-12 की दूसरी छमाही में कमी आई थी, 2012-13 में

और गिरावट दिखाई दी (सारणी III.1)। दूसरी तिमाही में गिरावट की गति और तेज होने के कारण 2012-13 की पहली छमाही में निर्यात में 6.8 प्रतिशत की गिरावट आई। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि विनिमय दर के हास से निर्यात को मिलने वाले लाभ को अधिक अनिश्चित समष्टि आर्थिक वातावरण में कमजोर वैश्विक मांग ने कम किया। अगस्त 2012 तक का गंतव्य देश-वार उपलब्ध आंकड़ा संकेत करता है कि यह अनिश्चितता खासकर यूरो क्षेत्र को किए गए निर्यात में आई काफी गिरावट में देखी गई। हाल ही में चीन को किए गए निर्यात की वृद्धि में भी नकारात्मक रुख देखा गया। हालांकि निर्यात के संबंध में अन्य प्रमुख गंतव्य देशों यथा - अमरीका और ओपेक देशों की मांग लगभग पूर्ववत् रही। अधिकांश अन्य क्षेत्रीय और गैर-पारंपरिक बाजारों, खासकर दक्षिण-पूर्वी एशिया और लैटिन अमरीका की निर्यात मांगों में कमी आई।

III.2 निर्यात के प्रमुख क्षेत्र जो कमजोर बाह्य मांग के चलते बुरी तरह प्रभावित हुए, वे हैं - इंजीनियरिंग सामान, रत्न एवं आभूषण, वस्त्र और वस्त्र उत्पाद एवं पेट्रोलियम उत्पाद। इन कतिपय क्षेत्रों से किए गए निर्यात के मूल्य में कमी आने का कारण कमजोर बाह्य मांग के अलावा पण्यों की अंतरराष्ट्रीय कीमतों, खासकर धातु की कीमतों, में आई गिरावट भी हो सकता है। अमरीका और यूरो क्षेत्र में आर्थिक

सारणी III.1: भारत का वणिज्य व्यापार

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	अप्रैल-मार्च				अप्रैल-सितंबर			
	2010-11 (सं)		2011-12 (अ)		2011-12 (सं)		2012-13 (अ)	
	राशि	वृद्धि (%)	राशि	वृद्धि (%)	राशि	वृद्धि (%)	राशि	वृद्धि (%)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
<b>निर्यात</b>	<b>251.1</b>	<b>40.5</b>	<b>304.6</b>	<b>21.3</b>	<b>154.1</b>	<b>40.4</b>	<b>143.7</b>	<b>-6.8</b>
जिसमें से: तेल	41.5	47.1	55.6	34.0	29.2	65.2	25.6	-12.3
तेल से इतर	209.7	39.3	249.0	18.8	125.0	35.7	118.1	-5.5
सोना	6.1	41.9	7.0	14.8	3.6	42.3	3.1	-13.8
तेल से इतर और सोना से इतर	203.5	39.1	242.0	18.9	121.4	35.5	115.0	-5.3
<b>आयात</b>	<b>369.8</b>	<b>28.2</b>	<b>489.4</b>	<b>32.4</b>	<b>243.5</b>	<b>38.1</b>	<b>232.9</b>	<b>-4.4</b>
जिसमें से: तेल	106.0	21.6	154.9	46.2	75.7	51.8	80.8	6.8
तेल से इतर	263.8	31.1	334.5	26.8	167.9	32.7	152.1	-9.4
सोना	40.5	41.6	56.2	38.8	28.4	62.7	19.1	-32.9
तेल से इतर और सोना से इतर	223.3	29.3	278.3	24.6	139.5	27.9	133.1	-4.6
<b>व्यापार घाटा</b>	<b>-118.6</b>		<b>-184.8</b>		<b>-89.4</b>		<b>-89.3</b>	
जिसमें से: तेल	-64.5		-99.3		-46.5		-55.2	
तेल से इतर	-54.1		-85.5		-42.9		-34.0	
तेल से इतर और सोना से इतर	-19.8		-36.3		-18.1		-18.0	

सं: संशोधित। अ: अर्न्तम।

स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय।

एवं वित्तीय स्थितियों को सहज बनाने के लिए किए गए उपायों के बावजूद वैश्विक व्यापार की संभावनाओं के और खराब होने का खतरा मंडरा रहा है। इन अनिश्चितताओं की पृष्ठभूमि में 2012-13 में 360 बिलियन अमरीकी डॉलर का निर्यात लक्ष्य हासिल कर पाना चुनौतीपूर्ण प्रतीत होता है।

### मुख्यतः घरेलू वृद्धि में मंदी के चलते निर्यात में संकुचन

III.3 निर्यात में 2012-13 की पहली छमाही में 4.4 प्रतिशत संकुचन हुआ जो मुख्यतः घरेलू आर्थिक वृद्धि में गिरावट के साथ निर्यात की खराब संभावनाओं को दर्शाता है (चार्ट III.1)। आर्थिक गतिविधि में काफी कमी आने के कारण पेट्रोलियम, तेल और लुब्रिकेन्ट (पीओएल) के आयातों की वृद्धि दर में 2012-13 की पहली छमाही में 6.8 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई लेकिन गैर-तेल के आयातों में 9.4 प्रतिशत की गिरावट आई जो मुख्यतः सोने के निर्यातों में आई बड़ी कमी के कारण थी। यह गिरावट संभवतः सीमा शुल्क में हुई वृद्धि, एनबीएफसी द्वारा दिए जाने वाले स्वर्ण ऋण को सीमित करने की नीति एवं रुपये के मूल्यहास के कारण हो सकती है। निर्यात संबंधी वस्तुओं और पूंजीगत सामग्रियों के आयातों में आई गिरावट निर्यातोन्मुख क्षेत्रों तथा घरेलू निवेश के क्षेत्र में गिरावट संबंधी चिंताओं को दर्शाता है।

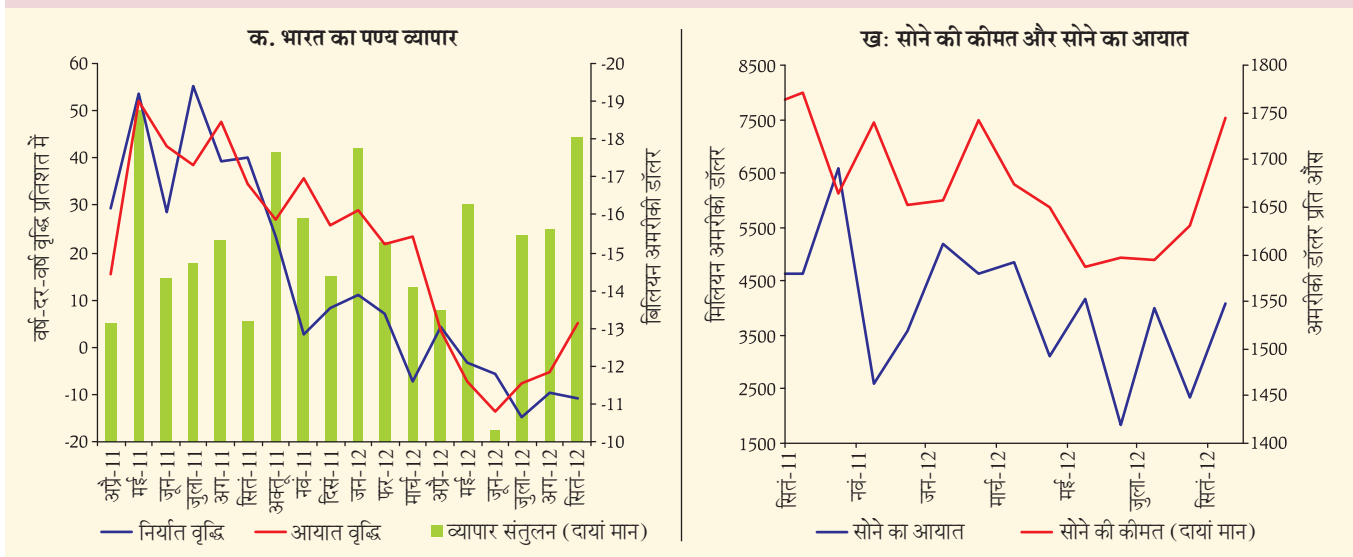
III.4 निर्यात और आयात में आई गिरावट मूल्य की दृष्टि से करीब-करीब बराबर होने के कारण भारत का पण्य व्यापार संबंधी घाटा 2012-13 की पहली छमाही में लगभग 89 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा जो 2011-12 की पहली छमाही के समतुल्य था। साथ

ही भारतीय बास्केट के तेल की वैश्विक कीमतों के स्थिर रहने से कुल तेल आयात बिल में कटौती करना मुश्किल होगा। इसके अतिरिक्त, कमजोर वैश्विक वृद्धि संभावनाओं एवं गिरते वैश्विक व्यापार के चलते निर्यात मांग में बाधा आने की संभावना है।

### भारी मूल्यहास आयात और निर्यात का कमजोर लोच व्यापार संतुलन में वृद्धि को बाधित करता है

III.5 आकलन दर्शाता है कि रीर के प्रति भारत के गैर-तेल निर्यात का लोच लगभग 0.4 है और इसका विलम्बित काल एक वर्ष का है। यह मुख्यतः निर्यात में आयात की अधिकता और मूल्य में परिवर्तन के प्रति आपूर्ति में कम बदलाव के कारण है। इसी प्रकार, गैर-तेल आयातों में मूल्य के लचीलेपन का अनुमान आंकड़ों की दृष्टि से नगण्य पाया गया क्योंकि इसमें मूल्य संबंधी असंवेदनशील तत्व जैसे - सोना और उर्वरक भी शामिल हैं जिनके मूल्य का अंतरण आगे नहीं होता। इसके अतिरिक्त, कुल पीओएल आयातों में मूल्य का लचीलापन केवल 0.1 है। यद्यपि ये अनुमान प्राक्कलन तरीकों, समयावधि और परिवर्तियों के चुनाव के प्रति संवेदनशील हैं लेकिन ये दर्शाते हैं कि विनिमय दर के मूल्यहास का प्रभाव भारत के निर्यात और आयात पर कम है। 'जे' कर्व के असर की मौजूदगी का आकलन करने वाला अनुमान दर्शाता है कि समग्र व्यापार संतुलन (आयात की तुलना में निर्यात का अनुपात) और गैर-तेल व्यापार संतुलन दोनों में परिवर्तन सांख्यिकीय दृष्टि से रीर के उतार-चढ़ाव के प्रति नगण्य है।

चार्ट III.1: भारत का पण्य व्यापार



## व्यापार घाटे में कमी और अधिक द्वितीयक आय के चलते 2012-13 की पहली तिमाही में सीएडी कम हुआ

III.6 2011-12 की पहली तिमाही की तुलना में व्यापार घाटे में आई कमी और द्वितीयक आय के चलते निवल प्राप्तियों में हुए सुधार का असर, 2012-13 की पहली तिमाही के निम्नतर चालू खाता घाटे में स्पष्ट परिलक्षित होता है। सेवाओं के निर्यात से होने वाली निवल प्राप्तियों में आई गिरावट के कारण पहली तिमाही में चालू खाते के घाटे में पड़े असर को द्वितीयक आय, जो मुख्यतः निजी अंतरण होता है, में हुई बढ़ोतरी, जो संभवतः रुपये के अवमूल्यन के कारण हुई, ने कम किया। फिर भी, सीएडी-जीडीपी अनुपात 2011-12 की पहली तिमाही की तुलना में 2012-13 की पहली तिमाही में थोड़ा अधिक अर्थात् 3.9 प्रतिशत था, जो मुख्यतः डॉलर के रूप में निम्नतर नॉमिनल जीडीपी और अंशतः रुपये के मूल्यहास के कारण था (सारणी III.2)। साथ ही, सेवाओं के निर्यातों के विभिन्न तत्वों की प्रवृत्ति, खासकर बिजनेस सेवाएं, एवं निजी अंतरण प्रमुख रूप से व्यापार के साझेदार देशों की आर्थिक गतिविधियों तथा रुपये के

विनिमय दर में हो रहे उतार-चढ़ाव पर निर्भर करेगी। वर्तमान संकेत यह है कि सीएडी 2012-13 की दूसरी तिमाही में पुनः बढ़ सकता है।

## एफआईआई प्रवाहों में सुधार से सीएडी के वित्तपोषण में सुधार आया

III.7 2012-13 की दूसरी तिमाही में एफआईआई प्रवाह में बदलाव देखा गया। 2012-13 की पहली तिमाही में एफआईआई ने इक्विटी सेगमेंट में लगाए गए अपने पैसे को वापस ले लिया लेकिन उनके द्वारा ऋण सेगमेंट में किए गए निवेश ने अंशतः भरपाई की लेकिन दूसरी तिमाही में दोनों सेगमेंटों में एफआईआई निवेश में काफी सुधार हुआ। सितम्बर 2012 के मध्य में सुधारात्मक उपायों को लागू करने के परिणामस्वरूप निवेश प्रवाहों में वृद्धि हुई जिसके चलते कुल एफआईआई निवेश डेढ़ महीनों में 5.5 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक हुआ। भारत में एफआईआई प्रवाह अप्रैल-अगस्त 2011 के 19.6 बिलियन अमरीकी डॉलर की तुलना में अप्रैल-अगस्त 2012 में घटकर 10.7 बिलियन अमरीकी डॉलर रह गया (सारणी III.3)।

III.8 सितम्बर 2012 के मध्य से एफआईआई प्रवाहों में मजबूती आने के पीछे का मुख्य कारण सरकार द्वारा उठाए गए नीतिगत उपायों

### सारणी III.2: भारत के भुगतान संतुलन की प्रमुख मदें

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

	2010-11 (आंस)	2011-12 (प्रा)	2011-12				2012-13 ति1 (प्रा)
			ति1 (आंस)	ति2 (आंस)	ति3 (आंस)	ति4 (प्रा)	
1	2	3	4	5	6	7	8
1. वस्तुओं का निर्यात	250.6	309.8	78.8	79.6	71.5	80.0	76.7
2. वस्तुओं का आयात	381.1	499.5	123.7	124.1	120.1	131.7	119.2
3. व्यापार संतुलन (1-2)	-130.5	-189.7	-44.9	-44.5	-48.6	-51.7	-42.5
4. सेवाओं का निर्यात	131.7	140.9	33.7	32.3	37.3	37.7	34.4
5. सेवाओं का आयात	83.0	76.9	17.4	18.3	21.1	20.0	20.2
6. निवल सेवाएं (4-5)	48.7	64.0	16.3	14.0	16.1	17.7	14.2
7. वस्तुओं और सेवाओं का संतुलन (3+6)	-81.8	-125.7	-28.6	-30.5	-32.4	-34.0	-28.3
8. प्राथमिक आय (निवल)	-17.3	-16.0	-3.6	-4.0	-3.8	-4.6	-4.9
9. द्वितीयक आय (निवल)	53.1	63.5	14.8	15.6	16.2	16.9	16.8
10. निवल आय (8+9)	35.8	47.5	11.2	11.6	12.4	12.3	11.9
11. चालू खाता शेष (7+10)	-46.0	-78.2	-17.4	-18.9	-20.2	-21.7	-16.4
12. पूंजी खाता शेष	0.04	-0.1	-0.3	0.2	0.1	-0.2	-0.2
13. वित्त लेखा शेष	48.9	80.7	18.7	19.0	20.6	22.4	16.5
जिसमें से: रिजर्व में परिवर्तन [(-) वृद्धि / (+) कमी]	-13.1	12.8	-5.4	-0.3	12.8	5.7	-0.5
14. भूल-चूक (11+12+13)	-3.0	-2.4	-0.9	-0.4	-0.5	-0.6	0.1
जापान मदें (जीडीपी के प्रतिशत के रूप में)							
15. व्यापार शेष	-7.7	-10.3	-9.8	-9.9	-10.7	-10.6	-10.0
16. निवल सेवाएं	2.9	3.5	3.6	3.1	3.5	3.6	3.3
17. निवल आय	2.1	2.6	2.4	2.6	2.7	2.5	2.8
18. चालू खाता शेष	-2.7	-4.2	-3.8	-4.2	-4.4	-4.5	-3.9
19. पूंजी और वित्त लेखा, निवल (रिजर्व में परिवर्तन को छोड़कर)	3.7	3.7	5.2	4.4	1.7	3.4	4.0

**टिप्पणी:** पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि उप घटकों का जोड़ समग्र से मेल न खाए।  
आंस: आंशिक रूप से संशोधित। प्रा: प्राथमिक।

## मौद्रिक नीति वक्तव्य 2012-13

समष्टि आर्थिक और मौद्रिक गतिविधियां द्वितीय  
तिमाही की समीक्षा 2012-13

### सारणी III.3: पूंजी प्रवाह

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

घटक	2011-12				2012-13	
	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2
	मासिक प्रवाह का औसत					
1	2	3	4	5	6	7
भारत में एफडीआई	4.1	3.1	2.3	1.5	2.0	2.4*
भारत द्वारा एफडीआई	1.0	1.0	0.6	1.0	0.7	0.3*
एफआईआई	0.8	-0.5	0.6	4.7	-0.6	2.6
एडीआर/ जीडीआर	0.1	0.1	0.03	0.01	0.01	0.03
ईसीबी	1.0	1.6	1.1	0.6	0.2	0.3
एनआरआई	0.4	0.9	1.1	1.6	2.2	0.2*

\*: जुलाई-अगस्त

के चलते विदेशी निवेशकों की सोच में आया परिवर्तन था (विवरण के लिए सारणी VII.1 देखें)।

III.9 2012-13 की पहली तिमाही का भुगतान संतुलन (बीओपी) आंकड़ा दर्शाता है कि सीएडी के वित्तपोषण हेतु समग्र पूंजीगत प्रवाह

पर्याप्त था जो भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में हुई मामूली वृद्धि से स्पष्ट है।

III.10 कर्ज सर्जक प्रवाहों में बाह्य वाणिज्यिक उधारों (ईसीबी) में पिछली तिमाही की तुलना में 2012-13 की दूसरी तिमाही में थोड़ा सुधार हुआ किंतु यह 2011-12 की दूसरी तिमाही से काफी कम रहा। हाल के महीनों में ईसीबी के संबंध में नीतिगत उपायों को सहज बनाए जाने के बावजूद, भारत का कॉरपोरेट क्षेत्र ईसीबी के जरिए राशि जुटाने के प्रति कम रुचि लेता हुए प्रतीत होता है जो कॉरपोरेट की आंतरिक स्थिति तथा निवेश की मांग में आई सुस्ती को देखते हुए जोखिम से बचने की प्रवृत्ति और साथ ही इस प्रकार की निधियों की बहुत ही कम मांग को दर्शाता है। आर्थिक अनिश्चितताओं के कारण विनिमय जोखिम या बचाव संबंधी लागत को देखते हुए, कॉरपोरेट उधारकर्ताओं के लिए ईसीबी की चुकौती के संबंध में रुपये में उच्चतर कर्ज लागत आती है। व्यापार ऋण और एनआरआई जमाराशियों के अंतर्गत प्रवाह अब तक मजबूत रहा। रुपये के मूल्यहास और ब्याज दरों के अविनियमन /वृद्धि के चलते पहली तिमाही में एनआरआई

### सारणी III.4: वित्तीय लेखा की विभिन्न मदें

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

	2010-11	2011-12	2011-12				2012-13
	(आंस)	(प्रा)	ति1 (आंस)	ति2 (आंस)	ति3 (आंस)	ति4 (प्रा)	ति1 (प्रा)
1	2	3	4	5	6	7	8
<b>1. प्रत्यक्ष निवेश (निवल)</b>	<b>9.4</b>	<b>22.1</b>	<b>9.3</b>	<b>6.5</b>	<b>5.0</b>	<b>1.4</b>	<b>4.2</b>
1.क भारत को प्रत्यक्ष निवेश	25.9	33.0	12.4	9.5	6.9	4.2	6.2
1.ख भारत द्वारा प्रत्यक्ष निवेश	-16.5	-10.9	-3.1	-3.0	-1.9	-2.9	-2.0
<b>2. पोर्टफोलियो निवेश</b>	<b>28.2</b>	<b>16.6</b>	<b>2.3</b>	<b>-1.4</b>	<b>1.8</b>	<b>13.9</b>	<b>-2.0</b>
2.क भारत को पोर्टफोलियो निवेश	29.4	16.8	2.5	-1.6	1.9	14.1	-1.7
2.ख भारत द्वारा पोर्टफोलियो निवेश	-1.2	-0.2	-0.2	0.2	-0.04	-0.2	-0.3
<b>3. वित्तीय डेरिवेटिव एवं कर्मचारी स्टॉक विकल्प</b>	<b>-</b>	<b>-</b>	<b>-</b>	<b>-</b>	<b>-</b>	<b>-</b>	<b>-0.5</b>
<b>4. अन्य निवेश</b>	<b>24.4</b>	<b>29.2</b>	<b>12.6</b>	<b>14.2</b>	<b>1.0</b>	<b>1.4</b>	<b>15.3</b>
4.क अन्य इक्विटी (एडीआर/जीडीआर)	2.0	0.6	0.3	0.2	0.1	0.03	0.1
4.ख मुद्रा और जमाराशियां	3.8	12.1	1.2	3.1	3.2	4.6	6.5
जमाराशियां लेने वाले निगम, केंद्रीय बैंक को छोड़कर (एनआरआई जमाराशियां)	3.2	11.9	1.2	2.8	3.3	4.7	6.6
4.ग ऋण*	18.6	16.8	14.9	9.5	-7.7	-0.03	3.8
4.ग.ि भारत को ऋण	18.3	15.7	14.9	8.9	-8.1	-0.02	3.7
जमाराशियां लेने वाले निगम, केंद्रीय बैंक को छोड़कर	1.2	4.1	11.5	3.9	-8.7	-2.6	3.0
सामान्य सरकारी (बाह्य सहायता)	5.0	2.5	0.4	0.3	1.4	0.3	-0.1
अन्य क्षेत्र (बाह्य वाणिज्यिक उधार)	12.2	9.1	3.0	4.7	-0.8	2.3	0.8
4.ग.ii भारत द्वारा ऋण	0.3	1.0	-0.02	0.6	0.5	-0.01	0.1
सामान्य सरकारी (बाह्य सहायता)	-0.03	-0.2	-0.04	-0.04	-0.04	-0.04	-0.1
अन्य क्षेत्र (बाह्य वाणिज्यिक उधार)	0.3	1.2	0.02	0.6	0.5	0.03	0.1
4.घ व्यापार ऋण और अग्रिम	11.0	6.7	3.1	2.9	0.6	0.2	5.4
4.ड अन्य खाते, प्राप्य/ देय-अन्य	-11.1	-6.9	-6.8	-1.5	4.9	-3.3	-0.4
<b>5. रिज़र्व आस्तियां</b>	<b>-13.1</b>	<b>12.8</b>	<b>-5.4</b>	<b>-0.3</b>	<b>12.8</b>	<b>5.7</b>	<b>-0.5</b>
<b>वित्तीय लेखा (1+2+3+4+5)</b>	<b>48.9</b>	<b>80.7</b>	<b>18.7</b>	<b>19.0</b>	<b>20.6</b>	<b>22.4</b>	<b>16.5</b>

\*: इसमें बाह्य सहायता, बाह्य वाणिज्यिक उधार और गैर-अनिवासी भारतीयों की बैंकिंग पूंजी एवं अल्पावधि व्यापार ऋण शामिल हैं।

प्रा: प्राथमिक आंस: आंशिक रूप से संशोधित (-): शून्य / नगण्य

टिप्पणी: पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि उप घटकों का जोड़ समग्र से मेल न खाए।

जमाराशियों के प्रवाह की गति तेज रही, लेकिन हाल के महीनों में प्रवाह की गति में कमी आई (सारणी III.4)।

III.11 आगे, पूंजी प्रवाह सुधार संबंधी नीतियों के सही कार्यान्वयन सहित वित्तीय समेकन और वैश्विक आर्थिक स्थितियों पर निर्भर करेगा। यूएस फेडरल रिजर्व द्वारा तीसरे दौर की मात्रात्मक सहूलियत की हाल की घोषणा का असर भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्था में पूंजी प्रवाह के लिए सकारात्मक रहने की संभावना है। फिर भी, कमजोर वैश्विक और घरेलू वृद्धि दृष्टिकोण यूरो क्षेत्र के जोखिम के साथ मिलकर अनिश्चितता पैदा कर सकता है जिससे वैश्विक स्तर पर जोखिम से बचने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल सकता है।

### रुपया एफआईआई प्रवाहों और मात्रात्मक सहूलियत के चलते सुदृढ़ हुआ है

III.12 2011-12 की चौथी तिमाही की तुलना में 2012-13 की पहली तिमाही में 7.1 प्रतिशत के मूल्यहास (औसतन आधार पर) के पश्चात, रुपया जुलाई-अगस्त 2012 में डॉलर की तुलना में कमजोर रहा, जो प्रमुख रूप से बाह्य गतिविधियों के कारण था। फिर भी इस अवधि में 3.7 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक के कुल एफआईआई प्रवाह की वजह से ₹54.6 से ₹56.4 प्रति डॉलर के सीमित दायरे में आ गया। तथापि, सितम्बर 2012 के दूसरे सप्ताह से रुपये की स्थिति में यूएस डॉलर की अपेक्षा सुधार हुआ। इसके बाद यूएस फेडरल रिजर्व द्वारा घोषित तीसरी मात्रात्मक सहूलियत के बाद वैश्विक मुद्रा बाजार में यूएस डॉलर कमजोर पड़ा और साथ ही सुधारात्मक उपायों के परिणामस्वरूप भारत में पूंजी प्रवाह में वृद्धि हुई। तथापि, 08 अक्टूबर 2012 से रुपया कमजोर पड़ा जो मुख्यतः तेल का आयात करने वाली फर्मों द्वारा डॉलर की मांग की वजह से था। रुपये का रुझान सांकेतिक संदर्भ में दर्शाते हुए 19 अक्टूबर 2012 को 6 मुद्रा और 36 मुद्रा आधारित रीर ने मार्च 2012 के अंत में क्रमशः 4.1 प्रतिशत और 3.2 प्रतिशत मूल्यहास दर्शाया (सारणी III.5)।

### बाह्य ऋण में मूल्यांकन लाभ के चलते मामूली वृद्धि हुई

III.13 भारत के बाह्य ऋण ने जून 2012 के अंत में तिमाही-दर-तिमाही आधार पर 1.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की जिसके पीछे मुख्य कारण रुपये में मूल्यवर्गित अनिवासी बाह्य जमाराशियों (एनआरआई) में वृद्धि होना था, जो दिसम्बर 2011 में इन जमाराशियों की ब्याज दरों के अविनियमन के असर को दर्शाता है। तिमाही के दौरान तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में वृद्धि के चलते तेल कंपनियों द्वारा ऋण का उपयोग अधिकाधिक किए जाने के कारण अल्पावधि व्यापार ऋण में पर्याप्त वृद्धि हुई। बाह्य ऋण की संरचना का उल्लेखनीय पहलू यह

### सारणी III.5: सांकेतिक और वास्तविक प्रभावी विनिमय दर - व्यापार आधारित (आधार: 2004-05 = 100)

(प्रतिशत वृद्धि (+)/कमी (-))

	सूचकांक 19 अक्टूबर 2012 (प्रा)	वर्ष-दर-वर्ष घट-बढ़ (औसत) 2011-12	2012-13 (मार्च 2012 के अंत की तुलना में ज19 अक्टूबर 2012)
1	2	3	4
36-रीर	92.3	-3.2	-3.2
36-नीर	79.4	-6.4	-4.3
30-रीर	84.7	-2.9	-2.4
30-नीर	81.5	-5.4	-4.4
6-रीर	105.1	-6.8	-4.1
6-नीर	76.3	-7.9	-4.5
₹/अम.डॉ. (औसत)	54.5	-4.9	-12.0#
₹/अम.डॉ. (मार्च के अंत में)	53.7*	-12.7	-4.8*

नीर: सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर।

रीर: वास्तविक प्रभावी विनिमय दर।

अ: अर्नातिम। \*: 19 अक्टूबर 2012 को यथास्थिति।

# : अप्रैल 2011- मार्च 2012 की तुलना में अप्रैल- अक्टूबर 19, 2012।

टिप्पणी: सूचकांक में वृद्धि रुपए की मूल्यवृद्धि दर्शाती है एवं सूचकांक में कमी रुपए में मूल्यहास दर्शाती है।

था कि बाह्य वाणिज्यिक उधार के स्टॉक में तिमाही के दौरान उच्चतर चुकौती के कारण मामूली गिरावट आई (सारणी III.6)।

III.14 2012-13 की पहली तिमाही में सीएडी के वित्तपोषण के लिए प्रमुख रूप से ऋण प्रवाह का सहारा लिया गया और वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता जारी रही जिसका इक्विटी प्रवाह की मात्रा पर असर पड़ा। तथापि, भारतीय रुपये तथा अन्य

### सारणी III.6: भारत का बाह्य ऋण

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	मार्च 2011 के अंत में (आंसं)	जून 2011 के अंत में (आंसं)	मार्च 2012 के अंत में (आंसं)	जून 2012 के अंत में (त्व. अ.)	(4) की तुलना में (5) के प्रतिशत का घट-बढ़
1	2	3	4	5	6
1. बहुपक्षीय	48.5	49.4	50.5	49.8	-1.4
2. द्विपक्षीय	25.7	26.2	26.7	27.2	1.9
3. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष	6.3	6.4	6.2	6.0	-3.2
4. व्यापार ऋण (1 वर्ष से ऊपर)	18.6	18.7	19.0	19.1	0.6
5. बाह्य वाणिज्यिक उधार	88.6	92.7	105.2	104.8	-0.4
6. एनआरआई जमाराशियां	51.7	52.9	58.6	60.9	3.9
7. रुपया ऋण	1.6	1.6	1.4	1.2	-14.3
8. दीर्घावधि (1 से 7)	240.9	247.7	267.5	269.1	0.6
9. अल्पावधि	65.0	68.5	78.2	80.5	2.9
<b>कुल (8+9)</b>	<b>305.9</b>	<b>316.2</b>	<b>345.7</b>	<b>349.5</b>	<b>1.1</b>

आंसं.: आंशिक रूप से संशोधित त्व.अ.: त्वरित अनुमान



**सारणी III.7: बाह्य क्षेत्र संवेदनशीलता सूचकांक**

(अनुपात प्रतिशत में)

सूचकांक	मार्च 2011 के अंत में	मार्च 2012 के अंत में	जून 2012 के अंत में
1	2	3	4
जीडीपी की तुलना में कुल ऋण का अनुपात	17.8	20.0	21.7
कुल ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात (मूल परिपक्वता)	21.2	22.6	23.0
कुल ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात (अवशिष्ट परिपक्वता)	42.2	42.6	42.9
कुल ऋण की तुलना में रियायती ऋण का अनुपात	15.5	13.9	13.5
कुल ऋण की तुलना में रिजर्व का अनुपात	99.6	85.2	82.9
रिजर्व की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात	21.3	26.6	27.8
रिजर्व का आयात कवर (महीनों में)	9.6	7.1	7.0
आयात का रिजर्व कवर और ऋण चुकौती संबंधी भुगतान (महीनों में)	9.1	6.8	6.6
ऋण चुकौती अनुपात (चालू प्राप्तिओं की तुलना में ऋण चुकौती संबंधी भुगतान)	4.3	6.0	5.9
बाह्य ऋण (बिलियन अमरीकी डॉलर)	305.9	345.7	349.5

अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं की तुलना में यूएस डॉलर के मूल्य में बढ़ोतरी होने परिणामस्वरूप पहली तिमाही के दौरान मुख्यतः 7.9 बिलियन अमरीकी डॉलर के मूल्यांकन लाभ के कारण बाह्य ऋण में वृद्धि का परिणाम पिछली तिमाही की तुलना में कम हुआ। अतएव, मूल्यांकन लाभ को छोड़ दिया जाए तो, जून 2012 के समाप्त माह की स्थिति के अनुसार बाह्य ऋण के स्टॉक में 11.8 बिलियन की वृद्धि हुई होती।

**बाह्य संवेदनशीलता संकेतकों में कमी आई किंतु यह समकक्ष देशों के अनुरूप रहा**

III.15 2012-13 की पहली तिमाही में बाह्य क्षेत्र की संवेदनशीलता का आकलन करने के लिए विचार किए जानेवाले प्रमुख संकेतकों में कुछ अवनति देखी गई (सारणी III.7)। बाह्य क्षेत्र संवेदनशीलता के महत्वपूर्ण संकेतक जैसे कि ऋण-जीडीपी अनुपात, कुल ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण अनुपात के साथ-साथ विदेशी मुद्रा भंडार तथा आयात कवर में मार्च 2012 को समाप्त तिमाही की तुलना में जून 2012 को समाप्त तिमाही की स्थिति में अवनति हुई।

III.16 निवल अंतरराष्ट्रीय देयताओं द्वारा यथा वर्णित भारत का एनआईआईपी मार्च 2012 को समाप्त तिमाही के 244.2 बिलियन अमरीकी डॉलर से सुधर कर जून 2012 को समाप्त तिमाही में 220.3 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। तदनुसार, एनआईआईपी/जीडीपी अनुपात मार्च 2012 को समाप्त तिमाही की तुलना में जून 2012 को समाप्त तिमाही में घट गया। एनआईआईपी में वृद्धि मुख्यतः विनिमय दर के उतार-चढ़ावों के कारण मूल्यांकन में परिवर्तन होने के कारण था (सारणी III.8)।

**सारणी III.8 : भारत के समग्र अंतरराष्ट्रीय निवेश की स्थिति**

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

अवधि	मार्च-11 (आं.सं.)	जून-11 (आं.सं.)	सितं-11 (आं.सं.)	दिसं-11 (आं.सं.)	मार्च-12 (आं.सं.)	जून-12 (प्रा.)
1	2	3	4	5	6	7
निवल आईआईपी	-203.6	-216.1	-196.0	-204.7	-244.2	-220.3
आस्तियां	439.8	450.0	453.9	431.6	437.1	433.5
देयताएं	643.4	666.1	649.8	636.2	681.3	653.9
निवल आईआईपी/जीडीपी अनुपात*	-12.1	-12.2	-10.7	-11.1	-13.2	-12.2

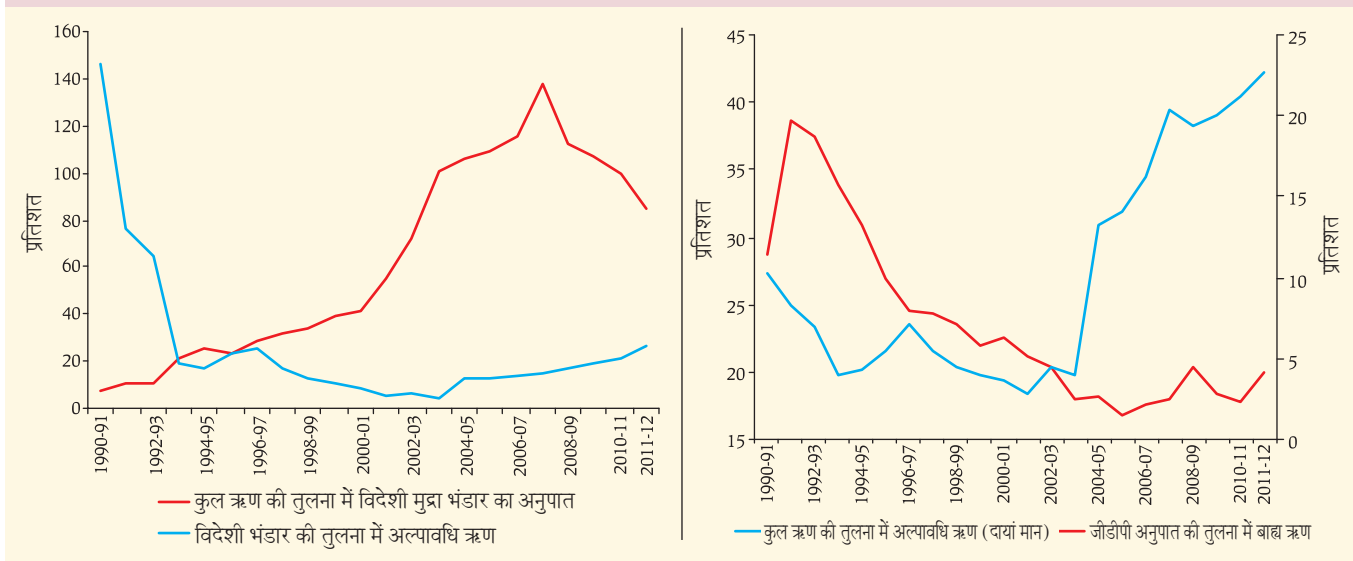
\* वार्षिकीकृत सकल देशी उत्पाद पर आधारित। आंसं: आंशिक रूप से संशोधित प्रा: प्राथमिक

III.17 ऐतिहासिक आंकड़े पिछले दो दशकों में बाह्य संवेदनशीलता के प्रमुख संकेतक जैसे - कुल ऋण की तुलना में विदेशी मुद्रा भंडार के अनुपात, विदेशी मुद्रा भंडार की तुलना में अल्पावधि ऋण और जीडीपी की तुलना में बाह्य ऋण के अनुपात में हुए कतिपय सुधार की ओर संकेत करते हैं (चार्ट III.2)। तथापि, हाल ही में इन संकेतकों में अवनति हुई। कुल ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण के अनुपात में 2004-05 से वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त हाल के वर्षों में कुल ऋण की तुलना में विदेशी मुद्रा भंडार के अनुपात में गिरावट आई लेकिन विदेशी मुद्रा भंडार की तुलना में अल्पावधि ऋण के अनुपात में वृद्धि हुई। यद्यपि विदेशी मुद्रा भंडार गुंजाइश प्रदान करता है, फिर भी ये प्रवृत्तियां चिंताजनक हैं।

III.18 विभिन्न देशों की स्थिति का विश्लेषण अन्य ऋणग्रस्त विकासशील देशों की तुलना में भारत की अपेक्षाकृत मजबूत स्थिति प्रस्तुत करता है। वैश्विक विकास वित्त रिपोर्ट 2012 के अनुसार, 2010 के अंत में जीएनआई की तुलना में बाह्य ऋण के अनुपात के अनुसार, भारत का 20 विकासशील देनदार देशों में पांचवां स्थान था। कुल बाह्य ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण स्टॉक और साथ ही बाह्य ऋण की तुलना में विदेशी मुद्रा भंडार के स्टॉक की दृष्टि से भारत की स्थिति चीन को छोड़कर अन्य ब्रिक देशों से तुलनीय है। यद्यपि चीन का कुल बाह्य ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात बहुत अधिक है लेकिन उसका विदेशी मुद्रा भंडार भी अधिक है इसलिए चीन के पास पर्याप्त कवर है (चार्ट III.3)।

III.19 कुल मिलाकर, भारत का बाह्य क्षेत्र चालू खाते के बड़े स्तर के असंतुलन के कारण स्थिरता संबंधी कतिपय मुद्दों से जूझ रहा है। यद्यपि रिजर्व कवरेज और नियंत्रणाधीन बाह्य ऋण कुछ राहत

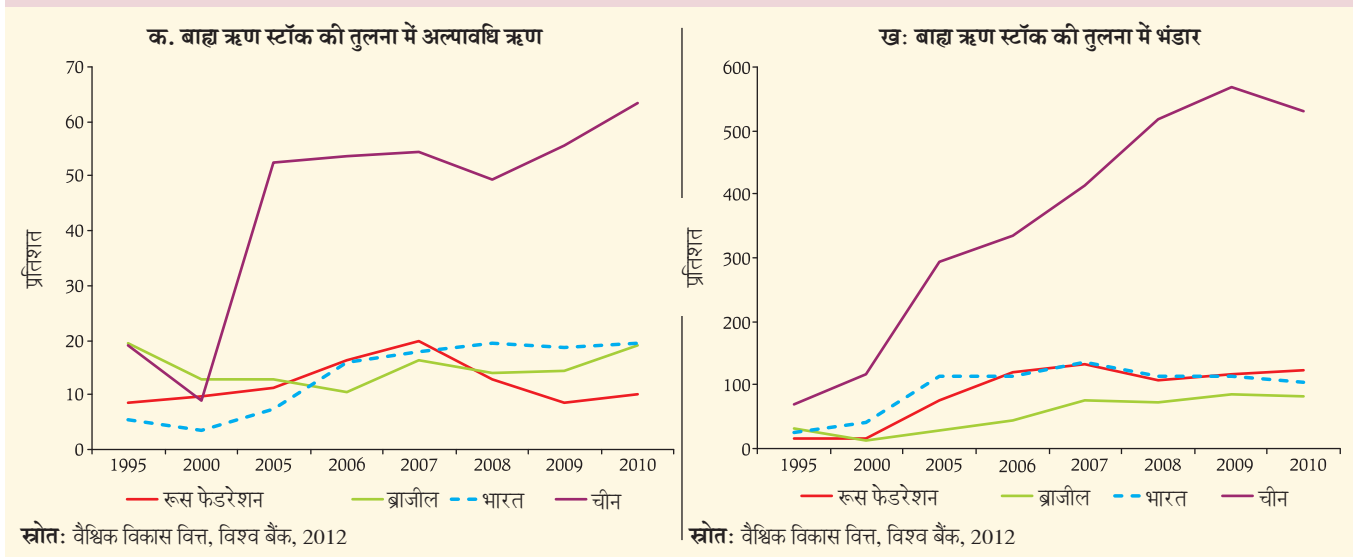
चार्ट III.2: भारत का बाह्य संवेदनशीलता संकेतक



प्रदान करता है लेकिन मध्यावधि स्थिरता लाने के लिए मुद्रास्फीति कम करने के लिए समष्टि-वित्तीय नीतियां बनाने, राजकोषीय खर्च को कम करते हुए मांग को नियंत्रित करने, ढांचागत एवं अन्य

नीतियों के जरिए व्यापार संबंधी प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने एवं मध्यावधि वहनीयता की दृष्टि से व्यापार नीति का प्रत्यक्ष रूप से उपयोग किए जाने की जरूरत है।

चार्ट III.3: बाह्य संवेदनशीलता संकेतक: ब्रिक देश



स्रोत: वैश्विक विकास वित्त, विश्व बैंक, 2012

स्रोत: वैश्विक विकास वित्त, विश्व बैंक, 2012